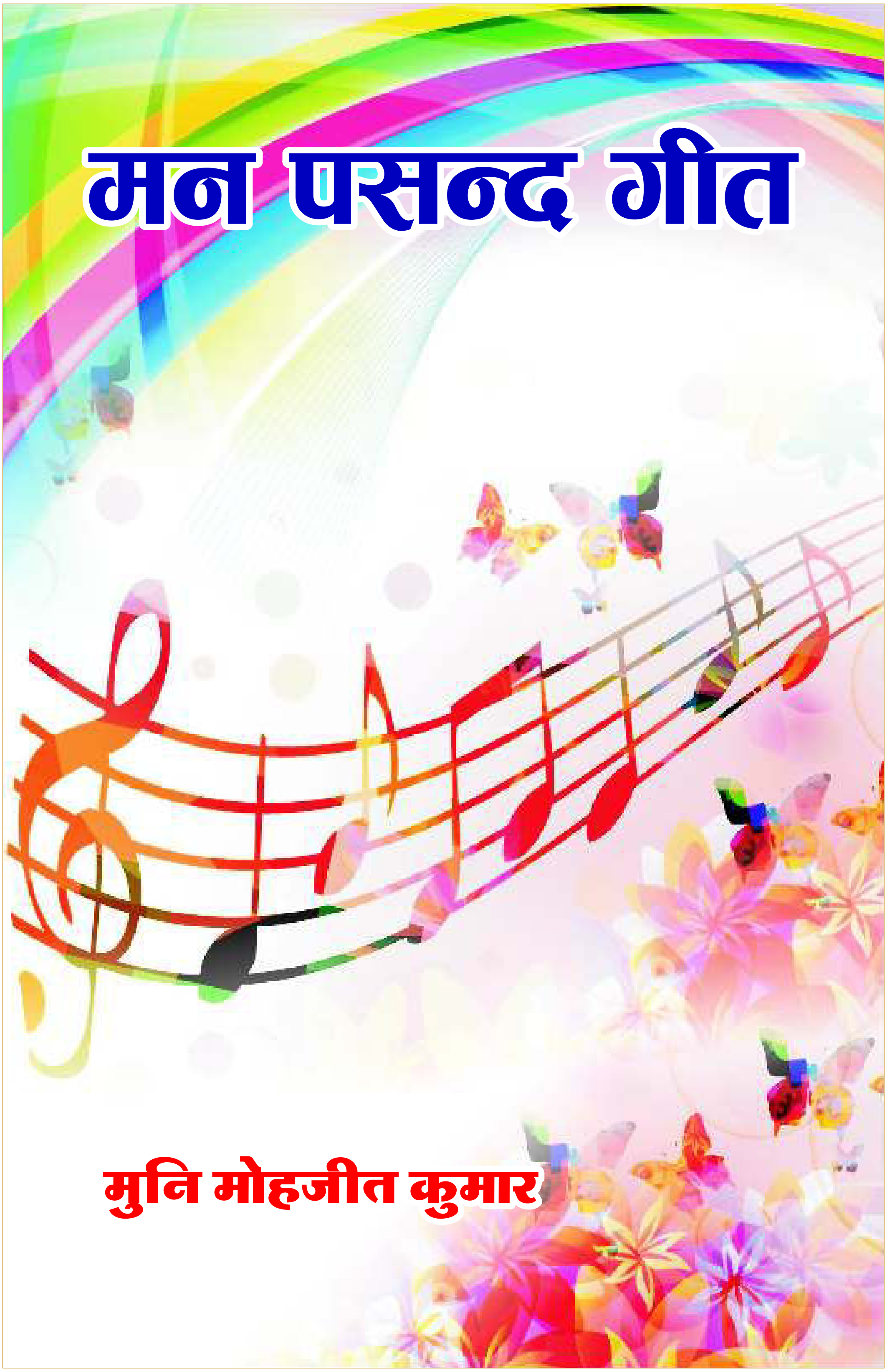© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अन्त : मन के

भावों से

निकले

जब

सार्वभौमिक

प्रीत।

उसी से

प्रकट

होता है।

“मनपसन्द गीत”

# मन पसन्द गीत

## मुनि मोहजीत कुमार

जैन विश्व भारती प्रकाशन



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

**प्रकाशक :**
जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं–341306
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (01581) 226080, 224671
ई–मेल : books@jvbharati.org

**रचनाकार :** मुनि मोहजीत कुमार

**Books are available online at**
**https://books.jvbharati.org**

**ISBN No. :** 978-81-935173-2-1

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

**प्रथम संस्करण :** फरवरी 2018

**मूल्य :** अस्सी रुपये मात्र

**मुद्रक :** पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

**Man Pasand Geet - By Muni Mohjeet Kumar** ₹ 80/-



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'अर्हम्'

# सरगम

बोलते तो सभी हैं पर वे लोग कुशल हैं जो अपनी वाणी को गीत में ढाल देते हैं। श्वास तो सभी लेते है पर वे लोग कुशल हैं जो उसे संगीत में ढाल लेते हैं। कहा गया है- मनुष्य जन्म दुर्लभ है उसमें विद्या प्राप्ति सुदुर्लभ है। उसमें भी कवित्व शक्ति परम दुर्लभ है। मुनि मोहजीत कुमार जी ने उस परम दुर्लभता की ओर कदम बढ़ाने का प्रयत्न किया है। उनकी नई पुस्तक ''मन पसन्द गीत'' मेरे सामने है। यह गीत और संगीत दोनों का मणिकांचन संगम हैं।

गीत बहुत सारे लोग बनाते है पर उसे संगीत के रूप में प्रस्तुत करने वाले सब नहीं होते। मुनि मोहजीत कुमार जी में संगीत चेतना पहले प्रकट हुई है। यह एक प्रकृति प्रदत्त वरदान है। सन् 1974 में भगवान महावीर की 2500 वीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर लाल किले में आचार्य तुलसी के कर कमलों से दीक्षित होकर कुछ महिनों बाद ही मेरे सहयोगी के रूप में हमसफर बने। कुछ ही दिनों में हम लोग गुजरात, महाराष्ट्र, आंध्र की ओर यात्रा के लिए प्रस्थान कर गये। उस समय ये गीत बनाते तो नहीं थे पर गाते मस्ती से थे। हमारे हर कार्यक्रम में इनके गीत की मांग सदा रहती थी। धीरे-धीरे इन्होंने स्वयं भी गीत बनाना शुरू कर दिया।

सन् 1981 से गुरुदेव के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसमें भी इनके गीत गायन एवं मध्यान्ह - रात्रि प्रवचन का क्रम भी बना रहा। सन् 1990 में आचार्य श्री तुलसी के साथ पाली चातुर्मास था। वहां रात्रिकालीन कार्यक्रमों की एक व्यवस्था बनी हुई थी। उसमें शुक्रवार को काव्य सन्ध्या का संचालन मुनि मोहजीत कुमार जी ही करते थे। उसमें ये मुनि श्री मधुकर जी के सान्निध्य में अनेक सन्तों से गीत गवाते, काव्य पाठ करवाते तथा स्वयं भी गाते तथा काव्य स्वर भी प्रस्तुत करते। प्रत्येक शुक्रवार श्रोताओं



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की अच्छी उपस्थिति हो जाती थी। यह नारा बन गया 'शुक्रवार की शाम - काव्य संध्या के नाम'। यह बात आचार्य श्री के सामने आई तो एक शुक्रवार को स्वयं गुरुदेव पंडाल में पधारे और पूरे कार्यक्रम को ध्यान से सुना। प्रसन्नता से फरमाया - अच्छा है यह कार्यक्रम तुम नियमित रूप से चलाते रहो।

मुनि मोहजीत कुमार जी ने गीतों की कई छोटी-छोटी पुस्तकें लिखी है। इनके ''कल्पतरू रा बीज फल्या बलिदानां रा सुमन खिल्या'' आदि कुछ गीत तो इतने प्रसारित हो गये कि हमारे समाज के बच्चे-बच्चे के मुंह बोलते हैं।

'मन पसन्द गीत' पुस्तक में इनके गीतों का भाव पक्ष तथा कला पक्ष दोनों ही प्रकट हुए हैं। सहजता इनके गीतों की मुख्य बात है। कई गीत स्तुति प्रधान है तो कई गीत उपदेश प्रधान हैं। सभी गीतों की लय आम प्रचलित है इसलिए ये गीत सब लोगों के लिए उपयोगी बनेंगें। यह संभावना है।

तेरापंथ भवन, उदयपुर

'शासनश्री' मुनि सुखलाल



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

# प्राक्कथन

जीवन में संगीत का अपना विशिष्ट महत्व है। दीक्षा लेने से पहले मेरा गीत और संगीत से कोई रिश्ता नहीं था। संत-सतियों के प्रवचन या प्रार्थना में सामूहिक रूप से थोड़ा बहुत स्वर में स्वर मिलाने का अवसर मिला होगा पर मेरे लिए उसकी कोई कसौटी नहीं थी।

भगवान महावीर निर्वाण शताब्दी के सुरम्य अवसर पर आचार्य तुलसी के कर कमलों से दिल्ली में संयम ग्रहण करने के बाद मुनि श्री सुखलाल जी के साथ गुजरात की ओर प्रस्थान किया। यात्रा पथ में मुनिवर प्रवचन भी करते साथ ही गीत गायन भी करते। मैं भी कुछ स्वर में स्वर मिलाने की कौशिश करता। इस कौशिश और कुछ उत्साह ने मुझे गायन के क्षेत्र में गतिशील बनाया। इस यात्रा क्रम में कुछ समय का प्रवास अहमदाबाद रहा। वहां गंगाशहर निवासी नेमचन्द जी डाकलिया से संपर्क हुआ। उस समय के वे अच्छे गायक थे। उन्होंने भी मुझे कुछ गीतों की लयों को धारण करवाया। तब से गायन का क्रम निर्बाध चलता रहा।

इस यात्रा क्रम में मुनि श्री सुखलाल जी के साथ मेरा प्रथम चातुर्मास सूरत (गुजरात) में हुआ। वहां मेरे गीत गाने की बड़ी मांग रहती थी। इसी परिप्रेक्ष्य में मैनें कई गीत याद किए। जिसमें - तेरा जीवन सुख से भर जाए, जीने वाले जीवन मधुर बनाए जा आदि के साथ मीठो बोले है, उपर स्यूं मीठो बोले है, थांरै दिल में छुर्यां कतरण्या कोरो मीठो बोले है। यह गीत तो मैने चातुर्मास में अनेकों बार गाया होगा। इस गीत की राग और भाव-भाषा इतनी रूचिकर थी कि मेरा गाने की ओर रूझान बढ़ता गया। यद्यपि मैं संगीत की गहराई को नहीं समझता था पर छोटी अवस्था में स्वरों में जो सहज मधुरता होती है वह सबको अच्छी लगती है। इसलिए लोगों को मेरे गाने और मुझे भी अपने गाने में उत्साह जागता गया।



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पहले मैं दूसरों के द्वारा रचित गीत ही गाता था पर धीरे-धीरे मेरे मन में कुछ भाव उभरने लगे और मैंने भी गीतों की रचना शुरू कर दी। मैं नहीं जानता मेरा पहला गीत कौन सा था पर संभवत: आचार्यों के स्तुति गान से ही मेरा गीत रचना क्रम शुरू हुआ होगा।

इस क्रम कड़ी में प्रसंग के निमित्त अनेक गीतों का निर्माण सहज होता गया। इसी शृंखला में व्याख्यान के रूप में गेय काव्य भी लिखने लगा। प्रवचन में प्रवचन का तो अपना महत्व होता है, पर जब उसके साथ संगीत जुड़ जाता है तो वह और भी प्रभावक बन जाता है। इस भाव धारा से जुड़े कई छोटे - बड़े घटना - प्रसंगों को गेय - आख्यान के रूप में निर्मित किया। जिसका उपयोग भी नव आख्यानकारों के लिए सार्थक सिद्ध हुआ है।

गीत गायन के क्षेत्र में आचार्य श्री तुलसी के साथ तथा उनके सामने भी मुझे अनेक बार गीत गाने का मौका मिलता था। जिसे सुन गुरुदेव ने फरमाया- गाने का क्रम ठीक है, यह अभ्यास जारी रखना है। इसी परिप्रेक्ष्य में मैं मंच संचालन से भी जुड़ गया। मंच संचालन के क्रम में भी गीत प्रस्तुति के साथ काव्य की अनेक विधाओं में अपनी बात को प्रकट करने का साहस भी किया तथा सफलता भी मिली।

मुझे आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में सुदीर्घ काल तक मंच संचालन का अवसर प्राप्त हुआ। जो मेरे भाव-भाषा-शैली के विकास क्रम का निमित्त था। कुछ काल आचार्य श्री महाश्रमण जी की सन्निधि में मंच संचालन का सुयोग भी प्राप्त हुआ। ये यादें स्मृति पटल पर अमिट है।

गीत विधा में समय-समय पर मेरी गीतों की कई छोटी-छोटी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। इस बार मैं अपनी नई गीत रचनाओं की एक कृति



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

'मनपसन्द गीत' गीतकारों के सम्मुख प्रकट कर रहा हूँ। इस सन्दर्भ में मैं अपने मार्ग दर्शक शासन श्री मुनि श्री सुखलाल जी तथा मुनि श्री मुनिसुव्रत जी के प्रति अहोभाव प्रकट करता हूँ। अपने विशिष्ट सहयोगी मुनि भव्य कुमार जी जो कि अनेक राग-रागिनियों के संगायक है। उन्होंने भी मेरे गीतों को गाकर सहज सहमति मुखर की। गत तीन वर्षों से बाल मुनि जयेश कुमार जी भी गायन के क्षेत्र में गतिशील है। इनका भी योग सुरम्य है।

'मन पसन्द गीत' गायकों के लिए उपयोगी बने। इसकी सार्थकता उपयोगिता में निहित है।

तेरापंथ भवन, उदयपुर — मुनि मोहजीत कुमार



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

# अनुक्रम

## हिन्दी गीत


| | |
|---|---|
| खड़ा तेरे द्वार नाथ | 01 |
| प्रभु आदिश्वर | 02 |
| वन्दना महावीर | 03 |
| करुणा सागर वीर | 04 |
| आओ भगवन मेरे आंगन | 05 |
| करते महावीर को वन्दन | 06 |
| ऊँ जय दीपां नन्दन | 07 |
| भिक्षु के चरणों में | 08 |
| जय जयाचार्य | 09 |
| करें जय गणिवर को | 10 |
| संघ की शान | 11 |
| प्यारा नयन सितारा | 12 |
| भिक्षु शासन की | 13 |
| जय तेरापंथ | 14 |
| हे तुलसी तेरे | 15 |
| आओ हम सब | 16 |
| करते गुरुवर को | 17 |
| जैन धर्म महान | 18 |
| धर्म संघ शासन शेखर | 19 |
| महाश्रमण शासन | 20 |
| लक्ष्य हो आत्मा | 21 |
| अर्हत् वाणी पथ | 22 |
| अब जाग सयाने | 23 |




© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

| | |
|---|---|
| अनमोल तुम्हारा | 24 |
| नगर-नगर औ | 25 |
| धर्म ध्यान में | 26 |
| सत् संगत की महिमा | 27 |
| यह जग सपनों की | 28 |
| जीवन तुम्हारा | 29 |
| यह दुनिया एक | 30 |
| जाग उठो युवकों | 31 |
| जगाओ युवकों | 32 |
| करें हम संस्कृति का | 33 |
| नव शिक्षा के द्वारा | 34 |
| अपने सद् आचरणों से | 35 |
| अच्छे मानव | 36 |
| गीत प्रेम के | 37 |
| पूरब में छाई | 38 |
| कर लो-कर लो छात्रों | 39 |
| हमें जगाना शुभ संस्कार | 40 |
| जानो माता-पिता उपकार | 41 |
| धरा पर गूंज उठा | 43 |
| अणुव्रत को फैलाएं | 44 |
| साधना पथ पर | 45 |
| चेतना की खोज | 46 |
| व्यसनों से | 47 |



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

## राजस्थानी गीत


| | |
|---|---|
| श्रद्धा रो पथ | 51 |
| मैं तो प्रभुवर रा | 52 |
| गावां गावां गावां | 53 |
| आपां भीखण जी | 54 |
| कल्पतरु रा बीज | 55 |
| ऊँ भिक्षु-जय भिक्षु | 56 |
| समरां बाबै रो नित नाम | 57 |
| भिक्षु म्हारै मन रम्या | 58 |
| मर्यादा पुरुषोत्तम | 59 |
| एक र अठै पधारो | 60 |
| स्वामी भीखण जी | 61 |
| घुंघरु छम छमा छम | 62 |
| तुलसी तुलसी समरल्यो | 63 |
| म्हारै हिवड़े रा हार | 64 |
| दरस दिरावो | 65 |
| ओ धर्म सदा | 66 |
| रग-रग मैं धर्म | 67 |
| मिनख जमारो पायो | 68 |
| गफलत में मत खो | 69 |
| घर रा गोरख धन्धा | 70 |
| जीवन नै पावन करणै | 71 |
| ओ नर भव पायो | 72 |




© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

| | |
|---|---|
| मिनखां देही मिली | 73 |
| च्यानणीयो रहतां | 74 |
| अब मांयली थे | 75 |
| तूं तो मिनख जमारो | 76 |
| जीणो थोड़ो सो | 77 |
| मिनखां देही रो मोल | 78 |
| जीवन रो फूल | 79 |
| अनमोल ओ जमारो | 80 |
| देखो जीभड़ली रो | 81 |
| आंख्या रो तारो | 82 |




© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

# हिन्दी



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

खड़ा तेरे द्वार नाथ मुझको संभारो
भव सागर से पार उतारो ।।

जनम-जनम से तेरी यादगार में
घूमता हूं मैं तेरे इस दरबार में
तूं ही सहारा, अन्तर उजारा
आया तेरे शरणे अब तो उबारो ।।

राग और द्वेष की ग्रन्थियों को तोड़ूं
प्रभु तेरी आत्मा से आत्मा को जोड़ूं
आत्म ज्ञान तूं ही, आत्म ध्यान तूं ही
आत्मा में ज्योतिर्मय रोशनी उतारो ।।

भक्ति का दीप ले आरती उतारूं
समता की साधना से जीवन निखारूं
यही मेरी भावना, यही मेरी साधना
'मोहजीत' की प्रभु अर्चना निहारो ।।

लयः तुम्हीं मेरे मन्दिर ....



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभु आदिश्वर करुणा सागर तुम जग के अखिलेश
वन्दना श्री चरणों में ।।

अन्तरयामी तुमने राह दिखाई जग को धर्म की
करके तपस्या प्रभु तोड़ी जंजीरें बांधे कर्म की
भाग्य विधाता, जीवन त्राता हे जन-जन हृदयेश ।।

प्रथम बने थे याचक, प्रथम कहाए प्रभुवर तीर्थंकर
मानव संस्कृति का जो मंत्र दिया था अभिनव राजेश्वर
महक उठी वह माटी जिस पर दिया सत्य संदेश ।।

धन्य हुई मानवता पाकर उस सच्चे अणगार को
लाखों को तारा तूंने देकर संदेश इस संसार को
स्वच्छ बनाएं दिल का दर्पण ध्याकर ध्यान हमेश ।।

ज्ञान की ज्योति जगाई हर घट में इन्सान के
वरदान दे दो ऐसा जाग जाए श्रद्धा हर प्राण में
'मोहजीत' नित जाप जपें सब 'ॐ नमः ऋषभेश'।।

लय-मिलो ना तुम तो...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वन्दना महावीर सौ सौ वन्दना
भक्ति सुमनों से करें अभ्यर्थना ।।

तुम यहां आए धरा पावन हुई
दूर करने को जगत की क्रन्दना ।।

आ शरण तेरी हजारों तर गये
चण्डकौशिक औ कुमारी चन्दना ।।

कर लिया था प्राप्त केवल ज्ञान को
ध्यान तप फिर मौन की थी स्पन्दना ।।

साधना की लौ जली थी रात-दिन
लक्ष्य पाने तक हुई वह मन्द ना ।।

हो गये हम धन्य तेरा पंथ पा
भाव-मन से नित करें नवसर्जना ।।

लय-दिल के अरमां ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करुणा सागर वीर प्रभु को वन्दन शत्-शत् बार करें
समदर्शी हे पतितोद्धारक हम सब का उद्धार करें ॥

त्रिशला मां का लाल दुलारा वर्धमान प्रभु प्यारा है
लाखों-लाखों प्राणी के जीवन का एक उजारा है
ज्ञान की ज्योति जला कर प्रभुवर अन्तर मन का मैल हरें ॥

भव-भव से भटके मानव को जैन धर्म यह बतलाया
जागृत करके जन-मानस को तुमने सत्पथ दिखलाया
अपनाकर तेरे सत्पथ को हम भी नैया पार करें ॥

संयम समता सत्य अहिंसा प्रभु ने हमको बतलाया
मूर्च्छित मानवता को प्रभु ने जागृत करना सिखलाया
धन्य-धन्य ओ वीर तुम्हारी क्या गुण गाथा गान करें ॥

कष्ट अनेकों पड़ने पर भी साम्य-भाव से सहन किये
संचित कर्मों को प्रभु तुमने धर्म ध्यान से दूर किये
नित उठकर 'मुनि मोहजीत' तेरे चरणों में ध्यान धरें ॥

लय : चांदी की दीवार ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आओ भगवन मेरे आंगन मेरी इच्छा साकार करो
मझधार पड़ी मेरी नैया खेकर अब उसको पार करो ॥

कष्टों की घोर घटाएं ये मुझ पर घिर-घिर कर आई है
विपदाएं भी देखो भगवन् बादल सम मुझ पर छाई है
मैं हूं दुखियारी इक बाला मेरी अर्जी स्वीकार करो ॥

कर्मों की मार करारी है मैंने इस जग को जान लिया
आत्मा को पाने के खातिर सारे जग को प्रभु छान लिया
अब आई शरणागत तेरे मेरा भी अब उद्धार करो ॥

मैंने जाना था प्रभुवर तुम मेरे बन्धन को तोड़ोगे
वह शौर्य जगा मुझ अन्तर में आत्मा से आत्मा जोड़ोगे
क्यों जाते हो मुंह मोड़ प्रभो मुझ पर कुछ रहम विचार करो ॥

मैंने ठोकर खाई दर-दर सन्मार्ग दिखाओ हे प्रभुवर !
अन्तर मन ज्योति जले विभुवर बस दे दो ऐसा आशीर्वर
मैं जाऊँ तुझ पर बलिहारी मेरी आस्था स्वीकार करो ॥

लयः बाबुल की दुआएं ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करते महावीर को वन्दन
अर्पित भावों का यह चन्दन
मंगल अवसर आया है, सबका मन हरसाया है ।।

घोर तिमिर को दूर हटाने बन सूरज तुम आए
मानव के अन्तः स्थल में तुम समता दीप जलाए
जागा अन्तर का विश्वास
पुलकित जीवन का हर श्वास.... मंगल ।।

'आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है' यह प्रभु का फरमान
जड़, चेतन का भेद समझता वह है सदा महान
उतरे मूर्च्छा का उत्ताप
मिट जाए सारे संताप ... मंगल ।।

'सच्चं भयवं' जिसका प्रतिपल, संबल यदि बन जाता
'मोहजीत' संबल ले बढ़ने वाला मंजिल पाता
पाकर मंजिल का वरदान
बढ़ते जाएं हम अविराम ... मंगल ।।

लयः नीले घोड़े रा असवार ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऊँ जय दीपांनन्दन
ध्यान धरूं मैं निश दिन दे दो शुभ दर्शन ।।

आद्य प्रणेता भिक्षु, चरण, शरण तन-मन
चिहुं दिशि हरदम महके, श्रद्धा का चन्दन ।।

आप्त पुरुष वाणी का, गजब किया मंथन
उज्ज्वल आत्मा साधना, से सुरभित गणवन ।।

चार तीर्थ के तारक, भव-भव दुख भंजन
आस्था की शक्ति से, टूटे सब बंधन ।।

ऊर्जा और मनोबल, नित प्रति हो वर्धन
चित्त विमल है मेरा, निर्मल मन दर्पण ।।

श्वास-श्वास में जप से, कण-कण में पुलकन
'मोहजीत मुनि' ध्याये, हर्षित हर क्षण-क्षण ।।

लयः आरती ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु के चरणों में हम सब वन्दन बारंबार करें
उनके चरण कमल में सब मिल श्रद्धा कर उपहार धरें ॥

नगर केलवा की भूमि पर प्रभु ने अन्तः शोध किया
संयम धारण कर प्रभुवर ने जन-जन को सद्बोध दिया
उन सद्बोधों को अपनाकर हम अपना निस्तार करें ॥

धर्म संघ के सेनानी बन प्रभु धरती पर आए थे
जीवन की उस दीप शिखा से बुझते दीप जलाए थे
प्रभु की ज्ञान ज्योति से हम सब अन्तर का अंधार हरें ॥

प्रभु का जीवन जगमग-जगमग ज्योतिर्मय उजियारा था
लाखों-लाखों आंखों का तो प्रभु ही एक सितारा था
एक सुगुरु के अनुशासन पर चलकर नैया पार करें ॥

प्रभु की हर मर्यादा पर हम अपने चरण बढ़ायेंगे
हे श्रद्धेय आपके पथ पर तन-मन-प्राण बिछायेंगे
आजीवन प्रभु के सत्पथ को 'मोहजीत' स्वीकार करे ॥

लयः चांदी की दीवार ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय जयाचार्य श्री गणिवर की
जय संघ चतुर्थ यतीश्वर की ।।

शासन को नव उन्मेष दिया
गण विधि को नव परिवेश दिया
उस महामनस्वी श्रुतधर की ।।

नव आभा मन भावों में दी
स्व संवर हो चाहों में दी
ऐसे पीयूष पयोधर की ।।

अद्भुत जिनकी चिन्तन शैली
मंत्रों की शक्ति अलबेली
प्रतिभायुत अभिनव कविवर की ।।

आध्यात्मिक योगी थे अनुपम
अन्तर्मन जागृत था क्षण-क्षण
शासन शेखर सिद्धेश्वर की ।।

लयः जय बोलो संघ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करें जय गणिवर को वन्दन
जिनकी प्रज्ञा आभा से प्रमुदित गण का कण-कण ॥

था व्यक्तित्व निराला जय ने खींची नई लकीरें
युग-युग तक वे अमर रहेंगी उनकी अजब नजीरें
अद्‌भुत अनुशासन शैली को है अर्पण तन-मन ॥

सिद्ध पुरुष थे अपने युग के प्रज्ञा बड़ी निरुपम
पुण्यवान, महाज्ञानवान थे जीवन का क्रम अनुपम
राजस्थानी भाषा लेखन के श्रुतधर कुन्दन ॥

मर्यादा का उत्सव देकर गणवन को सरसाया
संघ समर्पण, संयम, सेवा का शुभ भाव जगाया
पाकर ऐसे दिव्य पुरुष को पुलकित यह गुलशन ॥

संघ व्यवस्था केन्द्रीकृत की जिसकी गण में छाया
जिसे संघ के मान्यवरों ने तन-मन से अपनाया
तब से अब तक फला-फूलता पा वह संजीवन ॥

युग पुरुष जय की वह छतरी चमत्कार दिखलाती
हर मानव के हृत् तंत्री में सोया शौर्य जगाती
'मोहजीत' ऐसे युगधर को करता नित अर्चन ॥

लयः ऋषिराज तुम्हारे...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संघ की शान बढ़ाएं हम
तेरापंथ धर्म शासन को शिखर चढाएं हम ॥

संघ हमारा अति उत्तम है लगता सबको प्यारा
विमल चेतना को जागृत करने का एक सहारा
ऐसे संघ सदन में रहकर मोद मनाएं हम ॥

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण महिमा इसकी फैली
आर्य भिक्षु ने संघर्षों की अभिनव होली खेली
पावनता की दिव्यमूर्ति को शीश झुकाएं हम ॥

संघ-संगठन, मर्यादाएं इससे शासन अविचल
श्रद्धा, शील, समर्पण की धारा बहती है कल-कल
इस धारा में पातक धो, पावन बन जाएं हम ॥

नव जागरणा, नई क्रान्ति और नई चेतना लाएं
'मोहजीत' शासन की सौरभ दिग्दिगन्त फैलाएं
नन्दनवन सम भैक्षव गण की महिमा गाएं हम ॥

लयः ऋषिराज तुम्हारे...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्यारा नयन सितारा
यह तेरापंथ हमारा।
सूरज की किरणों सा करता
हर दिल में उजियारा ।।

आर्य भिक्षु पुरुषोत्तम थे, महर्षियों में उत्तम थे
महाप्राण तेरापथ के, सब में ही सर्वोत्तम थे
मर्यादा का मंत्र दिया, अनुशासित इक तन्त्र दिया
जिसमें श्रद्धा और समर्पण का गूंजे जय नारा ।।

धरती, नभ के कण-कण में, जीवन के समरांगण में
मर्यादा का दीप जले, मानव मन के प्रांगण में
मर्यादा वीरों की ढाल, इसकी क्षमता बड़ी विशाल
मर्यादा ही जीवन का बन जाए सबल सहारा ।।

मर्यादा और अनुशासन, साधक का है जीवन-धन
मर्यादा है पथ दर्शन, अर्पित है इसको तन-मन
भैक्षव गण का है संबल इस पर होकर चलें अटल
'मोहजीत' मर्यादा का पथ बने प्राण की धारा ।।

लयः बच्चे मन के सच्चे ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु शासन की महिमा हम गाएंगे
तेरापंथ संघ की सौरभ दुनिया में फैलाएंगें ।।

आर्य भिक्षु ने अपने हाथों इसकी नींव लगाई थी
संघर्षों से जूझ-जूझ कर अभिनव ज्योति जलाई थी
इस ज्योति से जीवन को चमकाएंगें ।।

अनुशासन और संघ समर्पण तेरापथ का नारा है
इसीलिए यह भिक्षु संघ जन-जन का नयन सितारा है
ऐसे शासन की हम शान बढ़ाएंगें ।।

मर्यादा की वेदी पर जिसने सर्वस्व चढ़ाया था
संकट की घड़ियों में जिसने धर्म-ध्वज फहराया था
ऐसे संघ सदन को शीश झुकाएंगें ।।

धन्य-धन्य इस शासन की अब क्या गुण गाथा गाएं हम
'मोहतीज' सद्गुण सुमनों से अन्तर को महकाएं हम
इस गणवन को अन्तः अर्घ्य चढाएंगे ।।

लयः खड़ी नीम के नीचे...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय तेरापथ नवमें नायक
जय-जय जनजीवन उन्नायक ।।

मानस के मंजुल मोती थे
जीवन की सच्ची ज्योति थे
ज्योतिर्मय अद्भुत थे शासक ।।

तुम सच्चे युग निर्माता थे
भक्तों के भाग्य विधाता थे
नैतिक जागृति के संगायक ।।

तुम अखिल विश्व के तारे थे
तुम अखिल विश्व उजियारे थे
तुम ही थे अमृत के पायक ।।

जय वदना नन्दन अभिनन्दन
'मुनि मोहजीत' करता वन्दन
तारो अब हे सन्मति दायक ।।

लयः जय बोलो संघ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हे तुलसी तेरे चरणों में वन्दन है बारम्बार
हृदय के हार ॥
हे धीर वीर गणिराज तुझे है वन्दन शत्-शत् बार
हृदय के हार ॥

भैक्षव शासन नन्दन वन, कितना सुन्दर है उपवन
जो कोई इसमें रमण करेंगें कट जाएंगे सब बन्धन
अब ऐसी शक्ति जगाओ प्रभुवर कर लें बेड़ा पार ॥
हृदय के हार ...

चन्देरी में जन्म लिया, झूमर कुल को पवित्र किया
कोटि-कोटि वन्दन उस मां को जिसने सद् संस्कार दिया
हे ज्ञानवान अन्तरयामी अब तारो प्राणाधार ॥
हृदय के हार...

अणुव्रत आन्दोलन की पुकार, फैल रही हर घर-घर द्वार
नैतिक आन्दोलन ने पाया जग में बहुत बड़ा सत्कार
जग को तुमने जो सूत्र दिया वो आज हुआ साकार ॥
हृदय के हार...

तुलसी तेरा अभिनन्दन, 'मोहजीत' करता वन्दन
तेरे चरणों में रम जाए जीवन का हर-पल, हर-क्षण
प्रभु जन्म-जन्म के बन्धन कट कर हो जाए निस्तार ॥
हृदय के हार ...

लयः तेरी प्यारी-प्यारी सूरत...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आओ हम सब आज करें तुलसी को वन्दन रे
उनके चरणों में कर दें हम तन-मन अर्पण रे ।।

भैक्षव गण यह नन्दन वन है
सौरभ से सुरभित कण-कण है
इस उपवन में रहकर कर दें पूर्ण समर्पण रे ।।

पाकर के यह भैक्षव शासन
गौरवशाली हैं कितने हम
युग-युग से संचित कर्मों के टूटे बन्धन रे ।।

श्रमण संघ के तुम सेनानी
अमृत जैसी मीठी वाणी
तेरी शिक्षामय वाणी से सुधरे जीवन रे ।।

प्राणवान है संघ तुम्हारा
जन जागृति का एक सहारा
अनुशासित, मर्यादित इसका अभिनव दर्शन रे ।।

हम गणिवर तुलसी को पाएं
जीवन का नव दीप जलाएं
'मोहजीत' का प्रभु चरणों में शत्-शत वन्दन रे ।।

लयः दर्शन दो घनश्याम ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करते गुरुवर को हम वन्दन
अर्पित याद भरा यह तन-मन
कैसा अवसर आया है, सबका मन मुरझाया है ।।

नयनों का वह तेज देख कर सूरज भी शरमाता
जिधर दृष्टि पड़ती प्रभु तेरी उधर जगत मुड़ जाता
आकर हमको दर्श दिलाओ
अन्तर प्रज्ञा को विकसाओ।। कैसा ...

आज दिशाएं ढूंढ रही है कहां जगत के त्राण
सांस-सांस में खोज रहे हम अपने अन्तर प्राण
आओ हे! हम सबके तात
तुम थे युग के नये प्रभात ।। कैसा ...

मानवता के लिए किया तुमने जीवन भर काम
युगों-युगों तक अमर रहेगा 'तुलसी' तेरा नाम
सूने नयन निहारे आज
'मुनिवर मोहजीत' सरताज ।। कैसा ...

लयः नीले घोड़े रा असवार ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जैन धर्म महान
तेरापंथ महान
तुलसी संत महान

तुलसी की यादों भरा मन, कर रहा अन्तः नमन
जो दिए अवदान तुमने, राष्ट्र भी करता नमन ।।

धर्म क्रन्ति के स्वरों ने जगाई जन चेतना
नीति से न दूर कोई सदा मन संवेदना
बदलने युग को दिया था,
राष्ट्र को अनुपम चिन्तन ।।

मेरु सा मजबूत मन था चाह जन उत्थान की
जैन-जैनेतर मनों में भावना सम्मान की
मन में नव उल्लास छाया
प्रफुल्लित सबके नयन ।।

दिये जो आयाम अनगिन क्या गिनाए हम यहां
मानते लोहा जगत जन नत बना सारा जहां
संस्कृति के नीर से खिल उठा
यह अद्भुत चमन ।।

लय- ए वतन तेरे लिए ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धर्म संघ शासन शेखर को वन्दन कर हर्षाएं
तीर्थंकर के प्रतिनिधि गुरुवर अन्तर मन विरुदाएं
जय-जय महाश्रमण की जय ॥

धर्म चक्र के हे संवाहक बहुश्रुतधर सुज्ञानी
तन-मन-चिन्तन में आप्लावित महावीर की वाणी
चार तीर्थ के शासक की हम, यश गाथाएं गाएं ॥

गुरुवर का कर्तृत्व विलक्षण आत्म भाव संपोषित
अनुकम्पा करुणा सद्भावों से है हर पल ज्योतित
जो अभिधान तुम्हारा मंगल, हम उसको विकसाएं ॥

कल्पतरु सा पुण्य फलित है चिन्तामणि वरदायी
कामदुधा सम संपोषक प्रभु जगवत्सल सुखदायी
मनमोहक आभामण्डल से, शक्ति अनूठी पाएं ॥

युगद्रष्टा, समदर्शी, गुरुवर अनुपम अतिशय धारी
युग चेता, संस्कृति संगायक, मूरत है मनहारी
'मोहजीत' नत इन चरणों में अर्पित भाव ऋचाएें ॥

लयः माइन-माइन ....



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाश्रमण शासन शृंगार
ऊर्जा के अक्षय भंडार
गुरु का गौरव गाएं हम, अन्तर भक्ति सजाएं हम ।।

आत्म रंग में रंगा हुआ अद्भुत व्यक्तित्व तुम्हारा
सकल संघ में सतत बहाओ अतुल क्षीर रस धारा
तुमसे यह शासन गुलजार, महिमा तेरी अपरम्पार ।।

संघ चमन तुझ सा माली पा हंसता-खिलता जाता
आत्मभाव अमृत सिंचन से हर पल पुलकन पाता
भव-भव के उजले हस्ताक्षर, जन जीवन के पुण्य पयोधर ।।

करुणा, कर्मशीलता सह मैत्री की धार बहाई
नव चिन्तन नव सृजन योग से नव तरुणाई पाई
गुरुवर पौरुष के प्रतिमान, अनुपम आस्था के आस्थान ।।

दिव्य दिवाकर हे ज्योतिर्धर आत्म लक्ष्य कल्याणी
भिक्षु, जीत, तुलसी गणिवर की मुखर कर रहे वाणी
गुरुवर महाप्रज्ञ के पट्टधर जय-जय महाश्रमण गण शेखर ।।

लयः नीले घोड़े रा ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लक्ष्य हो आत्मा का उत्थान
भावशुद्धि से करें सदा ही अन्तर की पहचान ॥

सत्य अहिंसा के भावों से आत्मिक शक्ति जगाएं
समता, सहिष्णुता को हम सब जीवन अंग बनाएं
मुक्ति पंथ पर बढ़ने का है यह अनुपम सौपान ॥

सोते-सोते सदियां बीती अब तो जागो भाई
भाव समुज्ज्वल करने खातिर सुन्दर घड़ियां आई
जो जागेगा, वह पायेगा एक नया वरदान ॥

ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय, जाप से आत्म तत्व को पाएं
कथनी-करनी एक बना हम जीवन को चमकाएं
अवसर को जो समझ चले वह बनता सदा महान ॥

लघुता से प्रभुता मिलती है यह चिन्तन में लाओ
भाव उच्चता को अपनाकर लक्षित मंजिल पाओ
'मोहजीत' मन-भाव शुद्धि से होगा निज कल्याण ॥

लयः ऋषिराज तुम्हारे...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हत् वाणी के पथ पर चलकर, महावीर मुझे अब बनना है।
गुणस्थानों की श्रेणी चढ़कर, महावीर मुझे अब बनना है॥

सर्वज्ञ जिनेश्वर की वाणी, जो पापहारिणी कल्याणी
शुभ चिन्तन से भावित बनकर, महावीर मुझे अब बनना है॥

मैं विजय कषायों पर पाऊँ, मैं क्षमाशीलता अपनाऊँ।
समताधारी साधक बनकर, महावीर मुझे अब बनना है॥

मन की चंचलता को त्यागूं, स्थिरता को मैं नित आराधूं।
इन्द्रियजय, अविकारी बनकर, महावीर मुझे अब बनना है॥

मैं राग-द्वेष से मुक्त बनूं, मैं साम्यभाव संयुक्त बनूं।
इन भावों में तन्मय बनकर, महावीर मुझे अब बनना है॥

नित कर्मों के बन्धन खोलूं, अपनी करनी खुद ही तोलूं।
निज आत्मभाव दर्शी बनकर, महावीर मुझे अब बनना है॥

लयः महावीर तुम्हारे चरणों में...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अब जाग सयाने निद्रा तज, अवसर तेरे घर आया है
नित शुभ भावों से प्रभु को भज, अवसर तेरे कर आया है ॥

पल-पल करते जीवन बीता
सत् करणी का यह घट रीता
अब भी कुछ सोच अरे मनवा, अवसर तेरे कर आया है ॥

जब तक है पुण्य प्रबल तेरे
दिन-रात सभी रहते घेरे
स्वार्थों को घेरा तोड़ अरे, अवसर तेरे कर आया है ॥

प्रभु वाणी धारो अन्तर मन
पावन बन जाएगा जीवन
शाश्वत पर ध्यान टिका बन्दे, अवसर तेरे कर आया है ॥

मानव सुख-दुख का है कर्ता
बन्धन-मुक्ति का है हर्ता
'मुनि मोहजीत' मुक्ति हित यह, अवसर तेरे कर आया है ॥

लयः महावीर तुम्हारे चरणों ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनमोल तुम्हारा यह जीवन, इसकी कीमत पहचान
अरे इन्सान ...
जीवन का सार सदा संयम, इस तरफ जरा दे ध्यान
अरे इन्सान ...
अमृत का घट यह जीवन, गंगा जल सा है पावन
भौतिकता की जंजीरों में क्यों जकड़ा है पागल बन
बीती जाए हर एक घड़ी कर अपना अनुसंधान ॥

यह तन है नश्वर काया, बादल की ज्यों है छाया
इस मायावी दुनिया में अनजाने फंस कर पछताया
जीवन को सुखी बनाना है तो कर लो सच्चा ज्ञान ॥

सुख के साथी है प्यारे, दुख में हो जाते न्यारे
धन के पीछे मूर्च्छित बन कर खोये रहते है सारे
मोह माया भटकाये तब तक ना मिले मुक्ति सोपान ॥

फूल यहां जो खिलते हैं, आखिर में मुरझाते हैं
सद्गुण से अपने जीवन की सौरभ वे फैलाते हैं
'मुनि मोहजीत' सद्गुण अपनाकर बन जाओ भगवान ॥

लयः तेरी प्यारी-प्यारी सूरत...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नगर-नगर ओ द्वारे-द्वारे मन्दिर, मस्जिद, धाम
क्यों तूं भटक रहा इन्सान ।।
अनल-अनिल औ धरती कण-कण खोज रहा भगवान
अब तो सोच जरा इन्सान ।।

नहीं मन्दिर में, नहीं मस्जिद में,
नहीं गिरजा नहीं गुरूद्वारे में
रहा घूमता अंधेरे में
अन्तर ज्योत जगा तेरे में
जग झूठा है, माया झूठी सब झूठे अरमान ।।

अन्तर में युग-युग से सोये,
जन्म प्रमाद कार्य में खोये
आम्रफलों की चाह संजोये,
आक बीज तुमने है बोये
करनी का फल मिलता निश्चित संभल अरे नादान ।।

अविनाशी का ध्यान लगाओ,
कल्मष सारा दूर भगाओ
समता रस की धार बहाओ,
अन्तर में नवदीप जलाओ
'मोहजीत मुनि' इन भावों से है निश्चित कल्याण ।।

लयः कितना बदल गया...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धर्म ध्यान में लग जीवन उत्थान करो
धर्म चेतना जगा हृदय में अपना अनुसंधान करो ॥

आत्म तत्व का इच्छुक मानव राह धर्म की लेता है
मैत्री और क्षमा भावों से जीवन नैया खेता है
सदा सजग बन गत-आगत का ज्ञान करो ॥

मन की चादर धोने का अवसर आया तेरे घर पर
करुणा स्त्रोत बहाओ भाई जो बहता तेरे अन्दर
उसे बहाकर निज-पर का कल्याण करो ॥

शुद्ध चित्त में धर्म ठहरता यह शाश्वत भगवत्-वाणी
उत्तम मंगल धर्म धार लो है यह सुखकर कल्याणी
इसी धर्म से अपने झंकृत प्राण करो ॥

ज्योतिर्मय जीवन जीने हित सत्य, अहिंसा अपनाओ
'मोहजीत' तप, संयम द्वारा आत्म-भाव को विकसाओ
यही मार्ग मुक्ति का खुद प्रस्थान करो ॥

लयः खड़ी नीम के ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सत् संगत की महिमा निराली बड़ी
आई जीवन की यह एक सुन्दर घड़ी ॥

इसका लाभ उठाओ सभी मिलकर
सत् संगत से जीवन जाएगा सुधर
इससे तन-मन की जुड़ जाए अन्तर कड़ी ॥

मानव जीवन मिला इसको पावन करो
सद्‌गुण मोती से अपनी यह झोली भरो
अच्छी करणी करो मौत सम्मुख खड़ी ॥

सत् संगत ही मुक्ति का मार्ग सही
यह बात ऋषि-मुनियों ने सत्य कही
सत् संगत से पापों की टूटे लड़ी ॥

सत् संगत से बुरे भी अच्छे बने
जो भी मिथ्या में उलझे वे सच्चे बने
'मोहजीत' सुसंगति जीवन जड़ी ॥

लयः धर्म का बोध...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह जग सपनों की है माया
अब जाग अरे अवसर आया।
कब से सोया तूं उठ वन्दे!
सब कुछ जग में बादल छाया ॥

जो गुजर गया उसको छोड़ो
ममता के बन्धन को तोड़ो
है चमक चांदनी चार दिवस फिर क्यों है इसमें भरमाया ॥

किसका मन चाहा होता है
क्यों भार जगत का ढोता है
करनी अपनी-अपनी शाश्वत जैसा तरु वैसी ही छाया ॥

ऋजुता, मृदुता सुसंस्कृत हो
अन्तर का कण-कण झंकृत हो
समता की उस सुरसरिता में आत्मा सह उपकृत यह काया ॥

बदलो मन, चिन्तन की धारा
टूटे सब जड़ता की कारा
'मुनि मोहजीत' शुभ भावों से हर भविक सदा मुक्ति पाया ॥

लयः मैं राही भटकने वाला ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन तुम्हारा पल-पल यह बीत जायेगा।
बीता हुआ यह काल फिर ना लौट आयेगा।
जागो रे बन्धु ॥
तूने जीवन में क्या किया है बोल तो अब तक
करना है कर लै मानव तुझ में सांस हैं जब तक
जब सांस निकल जायेगा कुछ ना कर पायेगा ॥
बीता हुआ ...
फंसा निरन्तर मोह और माया के घेरे में
राग-द्वेष की धारा हरदम बहती तेरे में
जब धारा यह टूटेगी पावन बन जायेगा ॥
बीता हुआ ...
मंडराती तेरे शीश पर यह काल की छाया
झूठी दुनिया के रिश्ते है झूठी यह जग माया
अब भी संभल जा मानव नहीं तो पछतायेगा ॥
बीता हुआ ...
सद् आचार और व्यवहार से जो जीवन भर लेता
इस मायावी सागर को वह जल्दी ही तर लेता
'मुनि मोहजीत' तर सागर तूं मुक्ति पायेगा ॥
बीता हुआ ...

लयः करती हूं तुम्हारा ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यह दुनिया एक अजब माया
कोई नहीं जान इसे पाया।
ऊपर से भरा-पुरा लगता
भीतर है बादल की छाया॥

मुख राम हाथ में माला है
बाहर उजला दिल काला है
दोहरा यह रूप बड़ा घातक, क्यों है तूं इसमें भरमाया॥

ऊपर से मीठी बात करें
अन्दर छुरियों की घात करें
मनघट यह मूढ़ बना तेरा, क्यों मलिन बनी तेरी काया॥

अन्तर मन की आंखे खोलो
सत् करनी से जीवन तोलो
कुछ कर ले जो वह अपना है, इस जीवन का कब तक साया॥

निश्छल व्यवहार सदा सुन्दर
प्रकटे शुभ भाव नित्य सुखकर
'मुनि मोहजीत' का कथन यही, अपनाने वाला सुख पाया॥

लयः मैं राही भटकने ....



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जाग उठो युवकों अब अपना सोया शौर्य जगाना है
उठ कर कुछ पुरुषार्थ करें अब अपनी मंजिल पाना है ।।

छिपी हुई शक्ति भीतर में उसका कुछ उपयोग करें
आस्था, भक्ति के भावों से हर क्षण शुभता योग वरें
जागें, जगाएं आत्मिक बल को ऐसा कदम बढ़ाना है ।।

अब भी करवट बदलो युवकों निज कर्तव्य को जानें हम
मैं कहता हूं सत्य वही है बात कभी नहीं तानें हम
चरण रहे गतिशील सभी के अन्तर भाव बनाना है ।।

श्रद्धा, कर्म, विवेक, उज्ज्वलता जीवन का आदर्श बने
संघ, समाज हितों की रक्षा शक्ति सम उत्कर्ष बने
संस्कारों की ज्योति जागे ऐसा पथ अपनाना है ।।

चिर युवा सी स्फूर्ति तन में जागृति हो हर पल निज मन में
सबके सुख में अपना सुख है झंकृत हो चिन्तन कण-कण में
सद्भावों की बलिवेदी पर जीवन अर्घ्य चढ़ाना है ।।

लयः माटी री आ काया ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जगाओ युवकों अब नव जोश
जोश जगाओ, आगे आओ, हो तुम शक्ति कोष ॥

कठिन परिस्थितियों में भी मन किंचित कहीं ना डोले
उलझन भरी समस्याओं में नया द्वार हम खोले
देखो युवकों सबसे पहले अपने-अपने दोष ॥

सद्‌संस्कारों से जीवन को सदा सुवासित करना
लक्ष्य एक हो हम सबका अब फूंक-फूंक पग धरना
भटक न जाओ कहीं पे देखो रखना पूरा होश ॥

क्रान्तिदूत बन जाएं हम गुरुवर का लेकर संबल
गण-गौरव अक्षुण्ण रहे यह मनोभाव हो प्रतिफल
तन, मन, चिन्तन स्वस्थ बने मिट जाए सारे रोष ॥

सत्यं, शिवं, सुन्दरं का अनुराग हृदय में छाए
'मोहजीत' इन भावों से ही अन्तर मन सरसाए
दृढ़ संकल्प, अमिट आस्था से प्रकटे अन्तः तोष ॥

लयः ऋषिराज तुम्हारे...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करें हम संस्कृति का सद्ज्ञान,
कार्यशाला का लक्ष्य महान।
गुरुवर का है शुभ वरदान,
कार्यशाला का लक्ष्य महान॥

निर्माण लक्ष्य है इसका,
सापेक्ष सोच है जिसका
उजाला चिन्तन हो गतिमान-कार्य ...

हम बोध तत्व का पाएं,
अन्तर मन में रम जाएं
जिससे है जीवन कल्याण - कार्य ...

त्रिरत्न गुणों को जानें,
स्व धर्म-कर्म पहचानें
करना अपना अनुसंधान-कार्य...

दर्शन, दृष्टि को समझें,
ना बात-बात में उलझें
मिट जाए अन्तर अज्ञान-कार्य ...

पथ दर्शन हमको पाना,
अन्तर विश्वास जगाना
करना खुद का खुद उत्थान - कार्य ...

नव पीढ़ी हो संस्कारी,
पा ज्ञान बनें धृतिधारी
जिससे बने नई पहचान-कार्य ...

लयः हमारे भाग्य बड़े बलवान ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नव शिक्षा के द्वारा करना जीवन का उत्थान अब
जीवन के कण-कण में भरना एक मधुर मुस्कान अब ॥

हम है नन्हें फूल सदा सौरभ इसकी फैलाएंगें
आदर्शों पर चलकर हम आदर्श पुरुष कहलाएंगें
ले जीवन का सुखद जायका सफल बने अरमान अब ॥

अनुशासन में रहकर हम सब अपनी शान बढ़ाएंगें
सहनशील बन करके हम सब अपना मान बढ़ाएंगे
मन, भावों में सदा जगाएं अन्तर का संज्ञान अब ॥

काम करेंगे ऐसा जग में नाम अमर हो जाएगा
निज पर निज का शासन यह पैगाम मुखर हो जाएगा
व्यक्ति, समाज, राष्ट्र का करना हमको नव निर्माण अब ॥

मंजिल पाने खातिर हम सब प्रतिपल चलते जाएंगे
कांटों में रह कर भी फूलों के सम खिलते जाएंगे
आज करें हम सब मिल करके यह संकल्प महान अब ॥

लयः मानव को हम...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अपने सद् आचरणों से हम अन्तर को चमकायेगें
हम जीवन स्वच्छ बनायेंगें ॥

आज अपेक्षा है हम सबको बदले जीवन की धारा
सजग रहें स्व-कर्तव्यों पर हम अपने संयम द्वारा
शान्त, सुखी जीवन जीने हित मानवता अपनायेंगें ॥

नैतिक आत्मिक बोध जगाकर नई रोशनी लाना है
नई पौध के शुभ भविष्य को सम्यक् सफल बनाना है
मूल्य परक शिक्षा के द्वारा नव-व्यक्तित्व सजायेगें ॥

बूंद-बूंद से घट भर जाता कदम-कदम मंजिल मिलती
सुसंस्कारों के सिंचन से जीवन की बगिया खिलती
आदर्शों की सुरभी से हम कण-कण को महकायेंगे ॥

पावन लक्ष्य बने नित ऊँचा मानवता को अपनाएं
ऋजुता, मृदुता, अनुशासन को अन्तर में हम प्रगटाएं
'मोहजीत' संकल्प एक उज्ज्वल इतिहास रचायेंगे ॥

लयः विद्या के प्रांगण ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अच्छे मानव कहलायेंगें
उज्ज्वल इतिहास बनायेंगें।।

मानवता का रवि उदित हुआ
जन-जन का मन अब मुदित हुआ
मानवता को अपनायेगें।।

हम भेद-भाव को छोड़ेगें
कन्धे से कन्धा जोड़ेगें
हम क्रान्ति अनोखी लायेंगें।।

संस्कार हमारे हो पावन
जीवन में आए अनुशासन
हम सहज सजग बन जायेगें।।

हम नव भारत निर्माता हैं
हम अपने भाग्य विधाता है
श्रम से विकसित कर पायेंगें।।

ऊँचे शिखरों पर चढ़ना है
आगे से आगे बढ़ना है
ऐसा हम भाव जगायेंगें।।

लयः जय बोलो संघ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गीत प्रेम के सब मिल गाएं
सहज स्नेह, सौहार्द बढाएं॥

सबको समझे अपना भाई
करें नहीं हम कभी बुराई
साथी बन कर साथ निभाएं॥

भाईचारा जीवन का धन
मानव मन की सच्ची पुलकन
प्रेम सुजनता को विकसाएं॥

स्नेहभाव को सदा बढ़ाना
मित्र-मित्र तक स्वर पहुंचाना
मैत्री पथ पर कदम बढाएं॥

लयः स्वतन्त्र...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पूरब में छाई है लाली
उठने वाला अंशुमाली ।।

जागो-जागो अब मत सोओ
सुप्रभात को तुम मत खोओ
खोलो अब नयनों की प्याली ।।

बीती रजनी हुआ सवेरा
टूट गया है तम का घेरा
हुआ उजाला शक्तिशाली ।।

पवन सुपावन बड़ा सुहाना
बांट रहा आनन्द खजाना
हर्षित हर तरुवर की डाली ।।

खिले फूल सब महक रहे है
पंछी चहूं दिशी चहक रहे है
अजब बहार, गजब खुशहाली ।।

लयः स्वतन्त्र...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कर लो-कर लो छात्रों अपने जीवन का उत्थान रे
भावी भारत का करना है तुमको नव निर्माण रे
जाग जाओ-जाग जाओ ।।

श्वेत वस्त्र सम उज्ज्वल जीवन छात्रों का कहलाता है,
जैसा रंग चढ़ाना चाहें वैसा ही चढ़ जाता है
सदाचार अपनाने वाला हर दर आदर पाता है
दुराचार का लगे न धब्बा, रखना प्रतिपल ध्यान रे ।।

बचपन बड़ा कीमती इसको सद्व्यवहारों से भरना
कोरा घट है शिशु का जीवन दुर्गुण मदिरा मत भरना
सद्गुण अमृत से भर करके इसको अमृतमय करना
उसकी एक बूंद से होगा विष का झट अवसान रे ।।

झूठ कपट चोरी हिंसा के उस प्रवाह में मत बहना
गलत आदतों से सबको ही दूर निरन्तर है रहना
कोई कष्ट अगर आ जाए समभावों से हैं सहना
बन जाओगे इस दुनिया में फिर सच्चे इन्सान रे ।।

लयः आओ बच्चों तुम्हें ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हमें जगाना शुभ संस्कार, वे ही है जीवन आधार
हर क्षण-क्षण में, हर कण-कण में
सदा जगाएं हम सुविचार ॥

अहं भाव का घेरा तोड़ें
टूटे हुए दिलों को जोड़ें
भाईचारा, बढ़े हमारा, बहे हृदय में निर्मल धार ॥

आदर्शों के दीप जलेंगें
हरदम सच्ची राह चलेंगें
लक्ष्य बनाएं, कदम बढ़ाएं, मंजिल पास खड़ी तैयार ॥

भावात्मक परिवर्तन लाएं
हम अभिनव इतिहास बनाएं
मैत्री सरगम, गूंजे हरदम, बदलेगा सारा व्यवहार ॥

जीवन का विज्ञान मिला है
'मोहजीत' मन सुमन खिला है
शक्ति जगाएं, जागृति, लाएं, होंगे सब सपने साकार ॥

लयः अच्छे मानव...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जानो मात-पिता उपकार
भूल गये यदि उपकारों को जीवन है निस्सार ।।
जानो मात-पिता उपकार

मुख दर्शन की आस लगाई
जन्म दिया कुल बेल बढ़ाई।
आंगन की मिट्टी मुस्काई ।।
घर-परिकर में खुशी सवाई।
चारों ओर हृदय में पुलकन छाई अजब बहार ।।

लाड, प्यार से मां ने पाला
सर्दी-गर्मी सदा संभाला।
तुझ हित में निज हित को ढाला ।।
खान-पान पर ध्यान निराला।
ऐसे जनक और जननी का पाया तुमने प्यार ।।

अहंकार तजना सिखलाया
सहनशील बन रहो बताया।
श्रम करने का पाठ पढ़ाया ।।
सोया अन्तर बोध जगाया।
निज कर्तव्य निभाकर तुमको दिए सबल संस्कार ।।



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संस्कारी बन शान बढाए
अपनापन रख मान बढाए।
बन विनम्र कुल आन बढाए॥
गुरु सन्निधि से ज्ञान बढाए।
मनोभावना एक ही इनकी रहे शुद्ध आचार॥

यह सौभाग्य इन्हीं की छाया
शुभ दृष्टि ही इनकी माया।
सुसंस्कार इन्हीं से पाया॥
इनकी आशा का तूं साया।
लाज दूध की रखना इनकी बनकर कुल श्रृंगार॥

तन,मन का कर्तव्य निभाओ
मूल नहीं पर ब्याज चुकाओ
धर्म-ध्यान सहयोग दिलाओ
आत्म समाधि नित विकसाओ।
'मोहजीत' इनकी समाधि का बनो प्रबल आधार॥

लयः कितना बदल गया संसार ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धरा पर गूंज उठा यह स्वर
कन्याओं जागो-जागो बढ़ना है शुभ पथ पर।
अपनी निद्रा त्यागो, जागो आया यह अवसर ॥

संस्कारों की करें सुरक्षा भाव बने इस मन का
सद्संस्कारों से ही मूल्य बढ़ेगा इस जीवन का
सहज सादगी, श्रम निष्ठा का प्रण प्रकटे सत्वर ॥

हीन भावनाओं का घेरा तोड़ें हम सब मिलकर
बढ़ें सदा उत्साह लगन से शौर्य भाव में पलकर
लक्ष्य हमें अब ऊँचा करना भाव जगे अन्तर ॥

इस युग में हमको अपनी पहचान बनानी होगी
सोई अन्तर शक्ति हमें अब शीघ्र जगानी होगी
युग बदला है, हम बदलें आदर्शो के आखर ॥

गुरुवर के हम है आभारी ऐसा अवसर पाया
गुरुदृष्टि रूपी तरुवर की मिले सदा ही छाया
गुरु का कथन रहो अनुशासित युग देगा आदर ॥

लयः सुनो महावीर की...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अणुव्रत को फैलाएं हम
जन-जन के मन में अणुव्रत का दीप जलाएं हम ॥

सत्य अहिंसा के खंभों पर अणुव्रत टिका हुआ है
मैत्री भाव समन्वय नीति खुद में लिए हुआ है
ऐसे अणुव्रत से जीवन में ज्योति जगाएं हम ॥

बूंद-बूंद भरते रहने से ही घट भर जाता है
अणु से अणु बढ़ते रहने से ही पथ मिल जाता है
इसी भावना से जग को भावित कर पाएं हम ॥

स्वस्थ समाज सुखी परिवार योजना की यह रेखा
शोषण मुक्त समाज बने यह है अणुव्रत का लेखा
घर-घर में अणुव्रत का शुद्ध समीर बहाएं हम ॥

सुधरे खुद-समाज सुधरेगा अणुव्रत यह कहता है
सब धर्मों का सार समन्वय का दरिया बहता है
उस प्रवाह में नहा-नहा पावन बन जाएं हम ॥

लयः धर्म की लौ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साधना पथ पर प्रगति कर चेतना अपनी जगाएं
साधना के लक्ष्य से हम आन्तरिक बदलाव लाएं ॥

साधना जीवन की धारा
साधना ही है किनारा
साधना की हिमगिरी पर ध्यान का संगीत गाएं ॥

ध्यान से दुष्वृत्ति भागे
ध्यान से अनुभूति जागे
अनुभवों की श्रृंखला को उत्तरोत्तर हम बढ़ाएं ॥

ध्यान जीवन की निधि है
भाव-शुद्धि की विधि है
इस विधि से आत्म शान्ति की अलौकिक शक्ति पाएं ॥

ध्यान की पद्धति निराली
है यही आनन्द प्याली
उतर कर गहराईयों में आत्म साक्षात्कार पाएं ॥

लयः भावमीनी वन्दना ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चेतना की खोज में हम रह रहे हरदम
आत्मज्ञानी बन बजाएं ध्यान की सरगम ।।

धरा के कण-कण को हमने छान डाला है
कर्म के जंजाल से इसको निकाला है
विघ्न-बाधा चीर कर भर साहसी कदम ।।

और को ना देख अब अपने को देखें हम
अशुभता के दुर्गुणों को दूर फेंके हम
इस क्रिया को सजगता से कर बनें पावन ।।

चेतना पर इन कषायों ने दिया डेरा
शुद्ध चिन्मय रूप को भी बांह में घेरा
कषायों की इस गुलामी से बचें हरदम ।।

चेतना की शक्ति को हम सभी पहचानें
शक्ति के इस पुंज को गहराई से जानें
आत्म शक्ति जग उठे 'मुनि मोहजीत' सुगम ।।

लयः मेरा जीवन कोरा ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व्यसनों से जीवन होता बरबाद
अब तो त्याग दो।
देखो व्यसन भयंकर आग
जीवन डस जाता बन नाग॥

सुध-बुध बिल्कुल नहीं रहती है, करता घर का नाश
दुर्व्यसनों में जो पड़ जाता, खोता जीवन आशा॥

लाखों-लाखों की बरबादी, तन-धन होता शेष
घर में हानी, जग में निन्दा, बढ़ते नित संक्लेश॥

इसके कारण कितने-कितने, चौपट हो गये राज
मिट गये कौरव-पांडव के कुल, मिट गये नाज, रिवाज॥

काम क्रोध प्रगटे अन्तर में, नहीं शांति लवलेश
घर के बच्चे सदा दुःख में, खुद भी दुखी हमेश॥

'मोहजीत' की एक प्रेरणा, छोड़ो इस क्षण आज
जीवन बचता, आत्मा बचती, बचे तुम्हारी लाज॥

लयः सूरज री उगाली ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

# राजस्थानी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रद्धा रो पथ मंगलकारी
श्रद्धा भव-भव री उपकारी ।।

श्रद्धा स्यूं शुद्ध भाव जागै
जो बंध ज्यावै इण रे धागै
वो मोक्ष मार्ग रो अनुचारी ।।

जो रत्नत्रय अन्तर धारै
वो खुद आत्मा नै निस्तारै
इहभव-परभव में सुखकारी ।।

श्रद्धा दुर्लभ महावीर कह्यो
जो इण चिन्तन में सजग रह्यो
वींरी आत्मा स्यूं इकतारी ।।

श्रद्धा मन, भावां रो संबल
श्रद्धा गहरी राखो हर पल
दृढ श्रद्धा री महिमा न्यारी ।।

लयः जय बोलो संघ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मैं तो प्रभुवर रा गुण गाऊं रे
प्रभुवर रे चरणां में नित बलिहारी जाऊं रे ।।

घोर अंधारो दूर भगाकर सूरज बण कर आया
बाधावां नै चीर-चीर कर आगे कदम बढ़ाया ।।

कानां मांही किल्यां ठोकी पैरां खीर पकाई
साम्य भाव स्यूं अविचल रह कर्मा री कोड़ खपाई ।।

संगम, अर्जुन, चण्ड जिस्यां नै प्रभुवर थे तो तार्‌या
लाखां-लाखां भविक जनां नै भव स्यूं पार उतार्‌या ।।

राग-द्वेष जीतण खातिर समता री धार बहाई
अनेकान्त री दृष्टि दे आग्रह स्यूं मुक्ति दिराई ।।

सत्य धर्म रा परम पुजारी पावन सुमिरण थांरो
पल-पल मैं रटणै वालै रो है निश्चित निस्तारो ।।

ज्योतिर्मय महावीर प्रभु नै लुल-लुल शीश झुकावां
'मोहजीत मुनि' सह सगला मिल अन्तर मन विरुदावां ।।

लयः ढोला ढोल मजीरा...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गावां, गावां, गावां म्हे तो, वीर गुण गावां हो
सुमरां श्रद्धा स्यूं महावीर नै ।।

त्रिशला मां रा जाया थे तो, सिद्धार्थ रा लाल हो
शिखरां चढ़ायो जैन धर्म नै ।।

थांरो ज्ञान-ध्यान ओ, अपार ओ अनूठो हो
सारी दुनिया तो मानै आज हो ।।

चंड कोशियो प्रभुवर रै, चरणों में डंक मार्‍यो हो
चरणों स्यूं बही दूधां धार हो ।।

अणगिणती रा कष्ट प्रभुवर, धीरता स्यूं सह्या हो
काटी कर्मा री जंजीर हो ।।

राग अरु द्वेष दोनूं सम, भावां स्यूं जीत्या हो
प्रभुवर थे पायो केवल ज्ञान हो ।।

वीरां रा हा वीर प्रभुवर, नाम महावीर हो
शिवपुर री राह दिखाई आप हो ।।

'मोहजीत मुनि' इण अवसर पर, प्रभुवर रा गुण गावै हो
ध्यावै है पल-पल वारों ध्यान हो ।।

लय 'तेजा'



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आपां भीखण जी स्वामी री नित, बलिहारी जावांला
बलिहारी जावांला, मन में मोद मनावांला ।।

बाबो हो आपणो बड़ो अलबेलो... हां...
अन्तर रै भावां स्यूं नित, उठकर ध्यावांलां ।।

जाग्यां पछै तो उण नै सोणो नहीं भायो... हां...
इस्यै बाबै नै पलकां, सदा बिठावांलां ।।

सुध रीत-नीत स्यूं जिन पथ चाल्या... हां...
बारै पथ चाल आतम, बोध जगावांलां ।।

जग उजियारो बाबो पुण्याई रो पोरसो... हां...
हिवड़े रे देवता रा, गौरव गावांलां ।।

बाबै रे नाम रो सदा रेवै आसरो... हां...
इण रे सहारै बेगी, मुगति पावांलां ।।

लयः वदना रो लाल...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कल्पतरु रा बीज फल्या, बलिदानां रा सुमन खिल्या
आं सुमनां री सौरभ लेवण, आवो म्हारा स्वामी जी
आवो म्हारा भीखण जी
एक र तो पधारो नी ॥

दीपां सुत शासण सिरताज, नाम सुमरतां फलज्या काज
भगतां नै आशीर्वर देवण, आवो... ॥

थांरो शासण जग रो त्राण, इं शासण नै अर्पित प्राण
आं प्राणां ने अमृत सेवण, आवो ... ॥

निज हाथां स्यूं लिख्यो विधान, संघ संगठन बण्यो महान
उण नै पाछो आज पलेवण, आवो... ॥

काटी करमां री जंजीर, कष्टां में ना बण्या अधीर
बां कष्टां री क्हाण्यां केवण, आवो... ॥

आलोकित नभ धरा दिगन्त, जठै निकाल्यो तेरापंथ
उण ओरी में अब तो रेवण, आवो... ॥

पल-पल, छिन-छिन घ्यावां ध्यान, श्रद्धानत हो करां प्रणाम
म्हां सगलां री नैया खेवण, आवो ... ॥

लय : लूंटाकर लंका रो राज...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ॐ भिक्षु-जय भिक्षु रटन लगावां
म्हें तो दिन-रात ध्यावां, गणनाथ, अब तो पधरावो
पधरावो जी नाथ-पधरावो ॥
थांनै पल-पल ध्यावां, गणनाथ
अब तो पधरावो ॥

मीठा-मीठा गीत गा र थांनै म्है रिझावां
आपरै ही नाम री अलख जगावां
म्हे तो दिन-रात ध्यावां, गणनाथ, अब तो... ॥

आंख्यां मीच बैठ थांरों ध्यान म्हे लगावां
एक सांस जाप जप थांनै म्हे मनावां
म्हे तो दिन-रात ध्यावां, गणनाथ, अब तो... ॥

एक तान, एक रस भगति स्यूं गावां
भिक्खु स्याम्-भिक्खु स्याम् मन में रमावां
म्हे तो दिन-रात ध्यावां, गणनाथ, अब तो... ॥

सरधा रा देवता नै पलकां बिठावां
'मोहजीत' सागै सब थांनै म्हे बुलावां
म्हे तो दिन-रात ध्यावां, गणनाथ, अब तो ... ॥

लयः बालम छोटो सो ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समरां बाबै रो नित नाम
सरधा रे भावां स्यूं ध्यायां, सिद्ध हुवै सब काम ।।

जीवन रा उजियारा म्हारा, अन्तर घट रा राम
गंगा जल सा पावन उजला, म्हारा भिक्खु स्वाम ।।

संजम रा हा निर्मल पजवा, संजम बांरो प्राण
'मर पूरा म्हे देस्यां' कर स्यां, जीवन रो कल्याण ।।

जिण आणां रो सदा आसारो, लेकर घूम्या स्वाम
धर्म क्रान्ति रो बिगुल बजायो, गूंजायो घर-गाम ।।

सुध आचार पलावण खातर, दीन्हो संघ महान
एक गुरु, अनुशासन रो थे, कीन्हो जबर विधान ।।

इसो सुरंगो संघ आपणो, इं पर धणो गुमान
इं शासण रो सगला मिलकर, सदा बढावां मान ।।

ओ आपां रो मन मन्दिर है, ओ ही तीरथ धाम
'मोहजीत' बलिहारी जावै, पल-पल आठूं याम ।।

लयः झड़ाको माला रो...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु म्हारै मन रम्या जी, भिक्षु रो आधार।
वारी जावां स्वाम री म्हें, भिक्षु गण सिणगार।
भविक जन! आसथा स्यूं, समरो भिक्षु नाम ॥

मां दीपां रा डीकरा भिक्षु, बल्लू कुल उजियार
नगर कंटालिया जनमिया जी, सिहं सपन साकार ॥
भविकजन ...
अठ्ठारै सतरै समै जी, गुरु पूनम गुणवन्त
ओरी अन्धेरी उगावियो जी, सूरज तेरापंथ ॥
भविकजन ...

शास्तर भणिया भाव स्यूं जी, दीन्हों सुध आचार
दी सरधा सोने जिसी जी, धार्‌यां बेड़ो पार ॥
भविकजन ...

जिन मारग दीपावियो जी, साचो संजम धार
कीधो आरे पांचमें जी, सतजुग नै साकार ॥
भविकजन ...

परिषह सह्या आकरा जी, साहस रा सरदार
गण नै अखय बणावियो जी, दे मरजादा कार ॥
भविकजन ...

म्हे गण रा, गण मांहरो जी, मुकुटमणि गणिराज
सूत्यां, बैठ्यां, जागता जी, सांवरिये रो स्हाज ॥
भविकजन ...

लयः राजगृही रा वासिया ....



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मर्यादा पुरुषोत्तम स्वामी भीखण जी सिंवरां म्हें
भव-भव में शरणों बांरो है खरो ।।

सिद्धांतां री कीमत ऊपर जग नै तेरापंथ दियो
भविकां नै रस्तो मिलग्यो सांतरो ।।

इसो सुरंगो संघ कोई भागशाली पावै हो
आपां नै मिलियो आछे भाग स्यूं ।।

स्वामी जी सूझ-बूझ नै लाख-लाख लखदाद है
बांधी मर्यादा अद्भुत संघ में ।।

संघ समर्पण भावना नै अन्तर में बिठाई हो
रंग्या सगलां नै इक ही रंग में ।।

इण गण रो सब मान बढावां आपां रो ओ काम है
'मुनिवर मोहजीत' री आ भावना ।।

लयः तेजा ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक र अठै पधारो स्वामी, वाट जो रह्या थांरी
हाथ जोड़कर करां बीनती, अर्ज सुणो प्रभु म्हारी ।।

थे अर्हत् रा साचा प्रतिनिधि, अद्भुत संयम धारी
आगम रा अनुरागी प्रभुवर, जन-मन रा उपकारी ।।

मान और अपमान सह्यो थे, बणकर धीरज धारी
कष्टां नै हंस-हंस कर झेल्या, अनहद समता धांरी ।।

पंचम आरे कलजुग मांही, सत जुग सा अवतारी
समकित, संजम रो हर घट मैं कर्‌यो उजालो भारी ।।

भूल्योड़ा नै पथ दिखलायो शूलां सदा बुहारी
झरणै ज्यूं निर्मल, उपयोगी गतिमयता ही न्यारी ।।

मनड़ो म्हारो थां चरणां मैं थांस्यूं ही इकतारी
'मोहजीत' जयवन्तो शासन जावां नित बलिहारी ।।

लयः भर जोवन में ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामी भीखण जी रो नाम, आसी भव-भव मांही काम
ध्यावो-ध्यावो भिक्षु नाम ।।

दीपां रा दुलारा म्हारै प्राणां स्यूं भी प्यारा है
सांवरिया स्वामी जी सब रै जीवन रा उजियारा है
सगला वांरी ही किरपा स्यूं पायो तेरापंथ महान ।।

भिक्षु रो ओ शासण सब नै भव स्यूं तारण हारो है
इं शासण रो जैन जगत मैं सब स्यूं तेज सितारो है
इण री गुण गरिमा रो लोहो माने देखो जगत तमाम ।।

इण गणवन री बलिवेदी पर अर्पित सब अरमान है
मर्यादा जो बांधी भिक्षु वा ही शासन शान है
इण पथ जो चालै वांरो होसी निश्चित ही कल्याण ।।

मर्यादा निर्माता भिक्षु नै म्हें पल-पल याद करां
मर्यादा में रहकर नित प्रति जीवन नै आबाद करां
'मुनिवर मोहजीत' बांरे चरणां में शत्-शत् करे प्रणाम ।।

लयः शासन कल्पतरु...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घुंघरू छम छमा छम छण णण णण णण बाजै रे
दीपांनन्दन हिवड़े मांही सदा विराजै रे ॥

कंटालिया में जन्म्या स्वामी, सिंह सपन साकार
मां दीपां री छत्र छांह में, पाया शुभ संस्कार ॥

बाबो म्हारो अन्तरयामी, आंख्यां रो उजियारो
घोर विघन री बेला मांही, जीवन रो है स्हारो ॥

अंधेरी रातां में चमक्यो, बणकर वो ध्रुवतारो
सिरियारी रो संत आपणो, तीन लोक स्यूं न्यारो ॥

तपस्विनी री चर में तप कर, तप रो तेज बढायो
धम्मगिरी री पुण्य तलहटी, परमातम पद पायो ॥

रूं रूं मांही रम्यो रवै बस, भिक्षु थांरो नाम
थांरै चरणां री बलिहारी, जावां आठूं याम ॥

'मुनिवर मोहजीत' प्रभुवर नै, हरख-हरख विरुदावै
विघन-हरण बाबै भीखण रा, झूम-झूम गुण गावै ॥

लयः घुंघरू छम छमा...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी तुलसी समरल्यो तुलसी हिवड़े री कोर
सौ सौ वन्दना ॥

रतन धारिणी मां वदना सुत झूमर कुल उजियारो
प्रबल पोरसो पुण्याई रो है प्राणां स्यूं प्यारो
फूल पांखुड्यां खिल उठी पा तुलसी सा सिरमोर ॥

अणुव्रत प्रेक्षा री ज्योति स्यूं हर घट ज्योति जगाई
आगम री कर नव विवेचना ज्ञान किरण फैलाई
इण किरणां स्यूं ही मिटे अन्तर अंधारो घोर ॥

थारै शासण में बरतीज्यो हरदम चोथो आरो
लाखां आंख्यां में बसग्यो है थांरो वो उणियारो
इस्यै सारथी हाथ में शासण रथ री वा डोर ॥

नवमें पटधर श्री तुलसी नै तन-मन प्राण चढ़ावां
सरधा अरपण कर भगति स्यूं हरख-हरख विरुदावां
कीरत फूलां री महक आ फैली च्यारूं ओर ॥

जुग-जुग तांई इण शासण री कीन्ही थे रखवाली
घण भागां स्यूं गण नै मिलग्या आप जिस्या गणमाली
'मोहजीत' तुलसी सुमर जागैला भाग सजोर ॥

लयः चिरमी...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

म्हारै हिवड़ै रा हार, बसग्या सुरगा मझार
प्रभु नै ध्यावां
नित उठ तुलसी रा गौरव गांवां ।।

भौतिक युग में धर्म विधायक,
गण रा नवमां पट उन्नायक
तुलसी मन रा मोती, तुलसी जीवन ज्योति
भूल न पावां.... नित... ।।

वदनानन्द रो अतिशय भारी,
जाणै सतजुग रा अवतारी
तुलसी जीवन री सांस, तुलसी अन्तर विश्वास
पल-पल ध्यावां-नित... ।।

प्रभुवर जन-जन श्रद्धा पाई,
अणुव्रत, प्रेक्षा री बगिया खिलाई
तुलसी जीव जड़ी, समरूं घड़ी रे घड़ी
भगती भावां- नित... ।।

लाखां आंख्यां रा थे विश्वासी,
अब तो बणग्या थे सुरवासी
पाछी सुध लीज्यो नाथ, शीश राखीज्यो हाथ
चित्त चढ़ावां-नित... ।।

लयः तुमसे लागी लगन...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दरस दिरावो हरख बधावो
ऊभा बाट निहारां, गुरुराज म्हे
खिण-खिण सिमरां नाथ ।।

चन्देरी में चमक्या, विश्व मांही दमक्या
मानवता रा मान-गुरुराज थे ।
दीपती बा काया, निर्मल छाया
श्रद्धा रा आस्थान - गुरुराज थे ।।

मुखड़े री मुलकन, पुलकित तन-मन
सतजुग सा अवतारी-गुरुराज थे ।
हाथ रो जिकारो, घणो ... मनहारो
भव-भव मंगलकारी-गुरुराज थे ।।

जन-मन भावणो, अणुव्रत च्यानणो
घट-घट में फैलायो-गुरुराज थे ।
जुग निर्माता, बोध प्रदाता
संयम पाठ पढ़ायो-गुरुराज थे ।।

जन-जन देवता, पल-पल सेवता
आत्मा रा विश्वास-गुरुराज थे ।
जाप जपां दिन-रात,
याद आवो बात-बात
'मोहजीत' रा आश्वास-गुरुराज थे ।।

लयः अलख जगावां ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ धर्म सदा मंगलकारी
भविकां री नैया नै तारी ॥

ओ उपशम भाव सिखावै है
भूल्यां नै पथ दिखलावै है
ओ मोक्ष मार्ग रो सहचारी ॥

ओ क्रोध, मान रो शमन करै
ओ अहंकार रो दमन करै
आनन्द-चैन रो भण्डारी ॥

जो धर्म धार लै सुख पावै
छोटा-मोटा दुख कट जावै
इहभव - परभव रो सुखकारी ॥

ओ राग-द्वेष नै दूर करै
समता रस नै भरपूर भरै
'मुनि मोहजीत' है उपकारी ॥

लय जय बोलो संघ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

रग-रग मैं धर्म रमाल्यो थे
जीवन नै सरस बणाल्यो थे ।।

ओ फूल फूलतो कद गिरज्या
पतझड़ स्यूं मधुवन कद धिरज्या
इण पेली सौरभ पाल्यो थे ।।

सुख-दुख तो आता ही रहसी
समभावां स्यूं सगला ढहसी
समता री सरिता न्हाल्यो थे ।।

आछो-मूंडो जग मैं छासी
पाछो ओ भव कद तक पासी
स्व-पर हित बोध जगाल्यो थे ।।

ओ जीवन सांसां रै सागै
के साथ निभासी ओ आगै
इण रहता धर्म धारल्यो थे ।।

'मुनि मोहजीत' तन नश्वर है
ओ आत्म धर्म अविनश्वर है
इण पर ही ध्यान टिकाल्यो थे ।।

लयः जय बोलो संघ ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिनख जमारो पायो भोला क्यूं तूं व्यर्थ गमावै है
अनमोले चिन्तामणि स्यूं क्यूं कालो काग उड़ावै है ।।

पीवण खातर इमरत पायो बीं स्यूं क्यूं पग धोवै है
धरती आम बोवण री इं मैं, आक बीज क्यूं बोवै है
अवसर रो जो लाभ उठावै वो मोती निपजावै है ।।

पग तल रो नहीं ज्ञान जरा सो आकाशां रो ज्ञान कर्‌यो
अपणो ओगुण एक दिखै नहीं, औरां पर ही ध्यान धर्‌यो
आदरसां पर जो नहीं चालै वो के मिनख कहावै है ।।

यम रा दूत खड्या माथै पर केठा कद ले ज्यावेला
करणी आछी कर लै मनवा, नहिं तो तूं पछतावेला
अवसर रहतां आतम ज्ञान जगावै वो सुख पावै है ।।

चिन्ता लागी आगै री पर बोल के सागै जावैलो
सागै ल्येग्यो कांई सिकन्दर, यूं ही मूंडो बावैलो
'मोहजीत' ले उण नै ही ज्ञानी लोक सरावै है ।।

लयः माटी री आ काया...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गफलत में मत खो मना, नहीं आछी पाछो हाथ
हीरो लाखीणो...।

रात दिवस तूं मुग्ध बण्यो है इण दुनिया रै लारै
चार दिनां री रंगरली में मत तूं तो भरमा रै
खिण-खिण दिनड़ो ढ़ल रह्यो, क्यूं धर्‍यो हाथ पर हाथ।।
हीरो लाखीणो...।

चोरासी रे चक्कर में तूं भमतो-भमतो आयो
अन्तर रा पट खोल अरे तूं मिनख जमारो पायो
आसी माथै खाज जद, उठ ज्यासी लाग्यो हाथ।।
हीरो लाखीणो...।

चिन्ता नहीं अब चिन्तन कर लै के करणो है आगै
धन-दौलत स्यूं भरी तिज्युर्‍यां नहीं चालैली सागै
मोह, माया नै छोड़कर बणज्या जग में विख्यात।।
हीरो लाखीणो...।

जकी रातड़ी बीत चुकी बा नहीं बावड़कर आवै
करम जिस्या जो करै विसा ही फल मिलता ही जावै
'मोहजीत' चेतै जको पासी मुक्ति साक्षात्।।
हीरो लाखीणो...।

लयः चिरमी...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घर रा गोरख धन्धा छोड़ इक दिन जाणो पड़सी
जाणो पड़सी, इक दिन जाणो पड़सी.... घर ... ।

धन है ओ म्हारो प्यारो, प्यारा घर वाला
सगलां नै छोड़कर सिधाणो पड़सी ॥
घर रा ... ।

देखा देखी बोल भोला, कित्ता दिन चालसी
पाई-पाई रो लेख बताणो पड़सी ॥
घर रा ... ।

म्हारो-म्हारो करतां, कित्ता जन्म बीत्या
कोई न किण रो, मान मिटाणो पड़सी ॥
घर रा ... ।

करमां रो करजो थारै, कित्तो माथै चढ्ग्यो
करजै रै चैक नै चुकाणो पड़सी ॥
घर रा ... ।

'मोहजीत' केवै थांनै आछी करणी करल्यो
करणी हित प्रभु नै नित उठ ध्याणो पड़सी ॥
घर रा ... ।

लयः कानुड़ालाल...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन नै पावन करणै रो, ओ मारग धर्म बतावै है
जुग-जुग स्यूं भटक्या मिनखां नै ओ सूंवै गेलै ल्यावै है ।।

घण भागां स्यूं नर-तन पायो, चिन्तामणि रतन हाथ आयो
ऊपरली सुख सुविधा मैं तूं, क्यूं इण रो मोल भुलावै है ।।

घट में तो भर्‌यो खजानो है, बोलो थांस्यूं के छानो है
जो इण नै गफलत में खोवे, वो हाथ मसलतो जावै है ।।

अब राख भरोसो तूं अपनो, क्यूं भूल्यो है ओ जग सपनो
सपनै री इण मोह माया में, फंस ज्यावै वो पछतावै है ।।

चेतन रो दियो जगाणो है, अंधेरो दूर भगाणो है
वीं शुद्ध चेतना में सद्‌गुण भरणै वालो सुख पावै है ।।

अब धर्म ध्यान रो ले संबल, 'मुनि मोहजीत' बढ़णो प्रतिपल
इण धर्म नाव मैं बैठे जो, वो भव-सागर तिर ज्यावै है ।

लयः मैं राही भटकने ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ नरभव पायो अनमोल, इण नै कोड्यां स्यूं मत तोल
अवसर चूक्यां पछै तो पछतासी, म्हारी आतमा
सोच कांई करणो है ॥

ओ तन है कागज रो टुकड़ो
इण पर क्यूं ललचायो मुखड़ो
केठा, कद ओ पाणी स्यूं गल जासी, म्हारी... ॥

धन, यौवन में तूं भरमायो
रिश्ता-नाता में बिलमायो
कुण, कद किण रे बोल सागै जासी, म्हारी... ॥

स्वारथ रा ए बोल सनूरा
नहीं सधे जद होवै दूरा
फूल्या, फुलड़ा, के ठा कद मुरझासी, म्हारी... ॥

कर लै अब तो धरम कमाई
साथ चालसी आ ही भाई
जगतो-जगतो दिवलो कद बुझ ज्यासी, म्हारी ... ॥

थोड़ो सन्तोषी बणकर जी
भीतरले इमरत नै अब पी
'मोहजीत' री सीख धार तिर ज्यासी, म्हारी... ॥

लयः कल्पतरू रा बीज...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिनखां देही मिली तनै अनमोल, अब तो सोच रे
काढ ले इण तन रो तूं सार, पुगावेला बो मुक्ति द्वार ।।
मिनखां देही ... ।

काल घणेरो सूत्यां बीत्यो अब ऊग्यो है दिन
ओ दिनड़ो भी ढलतो जावै, देर न कर पल-छिन ।।
अब तो सोच रे... ।

धन रै लारै फिरै बावला ज्यूं खुद री परछाई
नहीं भरोसो पल-भर रो भी, आं सांसां रो भाई ।।
अब तो सोच रे... ।

किण रै ऊपर गर्व करै है कोई न थारो मीत
थारी म्हारी छोड़ अरे तूं, कर लै प्रभु स्यूं प्रीत ।।
अब तो सोच रे... ।

स्वारथ सधसी जद तक थारै रहसी सब अनुकूल
जद टूटेला धागो इण रो, बणसी सब प्रतिकूल ।।
अब तो सोच रे... ।

फंस्या पछे नहीं छूट सकैला ओ माया रो जाल
'मोहजीत मुनि' चेत अरे ओ, झूठो जग जंजाल ।।
अब तो सोच रे... ।

लयः सूरज री उगाली...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

च्यानणीयों रहतां-रहतां मोतीड़ा पोयले
नहीं तो रात पड़ ज्यासी, भोला भाईड़ा
अबै तो चेतज्या ॥

सोनै रे पींजरे में पंखीड़ो बैठ्यो, केठा कद उड़ ज्यासी
तन री धरती पर फूल बगीचो, नहिं मालुम कद कुम्हलासी ॥
भोला भाईड़ा... अबै...

ऊँचा-ऊँचा ए महल मालिया, कोई न सागै थारै आसी
जिन्दगी री लड़ थारी है किती पतली, लाग्यो बायरो टूट ज्यासी ॥
भोला भाईड़ा... अबै...

सांसां रो थारै घट में भर्‌यो खजानो, कुण जाणै कद खूंट ज्यासी
मिनख जमारो थारो कागद रो टुकड़ो, बूंद पड्यां गल ज्यासी ॥
भोला भाईड़ा... अबै...

काल रो नाग थारै माथै पर डोलै, कोई न आय बचासी
'मोहजीत' ओ माटी रो घड़ लो, लाग्यो टणकारो फूट ज्यासी ॥
भोला भाईड़ा... अबै...

लयः पीलो रंगा द्यो...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अब मांयली थे आंख नै उघाड़ल्यो कनी
उघाड़ल्यो कनी, कीं विचारल्यो कनी ।।

दूंजां नै देखण तांई, मन त्यार रेवै है
इण नै समझावण, धीरज धारल्यो कनी
अब ... ।।

क्रोध लोभ ममता री, लाय कित्ती लागी
इण नै बुझावण, समता धारल्यो कनी
अब... ।।

आतमा रै उपर देखो, कित्तो मैल आयो
इण नै हटावण सत नै, धारल्यो कनी
अब... ।।

'मोहजीत' लक्ष्य खातर चेतना जगावणी
इण नै जगावण कर्म, निवारल्यो कनी
अब ... ।।

लयः वदना रो लाल...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तूं तो मिनख जमारो पायो भाग स्यूं
इण नै समता रै सांचै में ढाल
उमर थारी बीत रही ॥

मिलग्यो पुण्योदय रो, तनै ओ उपहार
मत गफलत में खोवै तूं लाल ॥

अरे काम क्रोध मद, लोभ रा
थारै पग-पग बिछ्योड़ा है जाल ॥

भौतिक सुख-सुविधा मैं तूं लिप्त बण्यो
तज कर इक दिन जाणो है माल ॥

तूं तो भरमायो इण मोह जाल में
नहीं ठा कद आ ज्यावैलो काल ॥

अब तक बारै-बारै दौड़ रह्यो नित तूं
थोड़ो अन्तर नै भी संभाल ॥

'मोहजीत' अवसर रो लाभ उठावै जको
वो तो हो ज्यावै लो निहाल ॥

लयः तूं तो बाबुल रे ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीणो थोड़ो सो बावला, जीणो थोड़ो सो ॥
जरा सी करणी आछी करलै मनवा
जीणो थोड़ो सो ॥
जरा सो ले ले प्रभु रो नाम बावला
जीणो थोड़ो सो ॥

रच्यो, पच्यो गौरख धन्धे में ढल रही देख जवानी
जमदूतां रै आगै भाया नहिं चालै मनमानी ॥

असली हीरो हाथ लग्यो पण बीं स्यूं काग उड़ायो
परख नहीं तूं सक्यो बावला कांच समझ ठुकरायो ॥

सपनै में भी नहीं सोच्यो तूं समय ईयां उड़ ज्यासी
बातां-बातां में ही भोला ओ बूढापो आसी ॥

मोह नींद मैं सूत्यां-सूत्यां बीत्यो काल अनन्त
त्याग इनै जो बढै सुमारग बो साचो मतिमन्त ॥

घणी गई अब थोड़ी रही है, इण तो संभाल
'मोहजीत' अब सार काढ लै बीत्यो जावै काल ॥

लयः पल्लो लटकै ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिनखां देही रो मोल सब कूंतो सही
थारी म्हारी में इण नै थे खोवो नहीं ।।

ओ जमारो मिल्यो बड़ भाग घणो
सद्गुण धारयां स्यूं आवै है मिनखपणो
आछी भूंडी री बात अब सोचो सही ।।

दुख कोई नै भी देणो आछो नहीं
भाईपो ही सदा सुख नै बांटे सही
क्रोध प्रीत रो दुश्मण आ शास्त्र कही ।।

सुख स्यूं जीणो जदी थे सदा चावो हो
तो थे दुख रा ए बीज इण में क्यूं बावो हो
जिस्या बोस्यो, विस्या ही थे पास्यो सही ।।

दूजां रा अवगुण देखण नै सब त्यार है
जदी खुद रा ही देखे तो निस्तार है
बात सद्गुरु सब नै ही एक कही ।।

लयः हरजश...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जीवन रो फूल खिलाल्यो थे
इण री सुगन्ध अब पाल्यो थे ।।

ए नश्वर सुख नश्वर काया
मत इण में बिल्कुल भरमाया
इण स्यूं अब ध्यान हटाल्यो थे ।।

आ आत्मा विमल बणै थांरी
आत्मा स्यूं ही बस इकतारी
बस एक ही भाव रमाल्यो थे ।।

शुभ योग भाव अन्तर प्रकटे
ओ जीव कठे ही नहिं अटके
आत्मा री ज्योत जगाल्यो थे ।।

नित आत्म भाव में ही रमणो
अब राग-द्वेष नै है तजणो
ओ अन्तर बोध जगाल्यो थे ।।

लयः ओ धर्म सदा...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनमोल ओ जमारो क्यूं तूं व्यर्थ गमावै रे
व्यर्थ गमावै रे, क्यूं सिर पाप चढ़ावै रे ॥

फूल खिल्यो जो डाली एक दिन टूट सी
पड़ता ही मांही मांही वो कुम्हलावै रे ॥

एक लो है आयो जग में एकलो ही जावैला
कोई न थारो किण स्यूं प्रीत निभावै रे ॥

सुख में तो सागै थारै घणा, जणां आवै
दुख में तो सगला ही बस दूर पलावै रे ॥

तन तिसणां तो थोड़ी मन है घणेरी
इण स्यूं जो पार पावै वो तिर जावै रे ॥

'मोहजीत मुनि' कहवै जनम सुधारो
इण नै सुधारण वालो मुगति पावै रे ॥

लयः वदना रो लाल ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देखो जीभड़ली रो जबरो खेल तमाशो रे
बिना हाड़ री बाई इण रो मुंह में बासो रे ।।

छोटी सी आ लाली बाई जबरी धूम मचावै
घर हाणी और लोकां हांसी कजिया-राड़ करावै ।।

लप-लप करती चालै आ तो तोड़े प्रेम री डोर
बोलण में नहीं पाछी रैवे खूब मचावै शोर ।।

ठोड़ां-तोपां तलवारां स्यूं भी आ तेज तरार
घाव भरीजै कद इण रो आ मारै तीखी मार ।।

पल भर भी नहीं बैठे सिचली बिना बुलायां बोले
सोच समझ कर समझदार जन इण रो तालो खोले ।।

'मोहजीत मुनिवर' रो कहणो इण नै बस में राखो
आ बस में हो ज्यावै जद भी आनन्द रा फल चाखो ।।

लयः ढोला ढोल मजीरा ...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आंख्यां रो तारो म्हारो लागै सगलां नै प्यारो
सत् रै पथ पर नित तूं बढ़तो जाजै, म्हारा नानूड़ा ॥
तूं कुल नै दिपाई जै ॥
तूं सब नै सुहाईजै ॥

पग-पग मंगल थारै सागै, बढ़तो जाजै हरदम आगे
शुभ आशीर्वर गुरु रो लेतो जाजै, म्हारा नानूड़ा .. तूं... ॥

ज्ञान, ध्यान रहिजे रंग-रातो सहिजै सगलो ठंडो-तातो
जिन शासण री जश झण्डी फहराजै, म्हारा नानूड़ा.... तूं.... ॥

सद्व्यवहार सदा तूं राखी, लो भरैला थारी साखी
ऊँचै आदरसां पर चढ़तो जाजै, म्हारा नानूड़ा .... तूं .... ॥

अहंकार तज रहिजे नमतो, लागैला सगलां नै गमतो
समता री गंगा में नित-नित न्हाजै, म्हारा नानूड़ा.. तूं... ॥

त्याग और वैराग बढ़ाई, सद्गुण स्यूं जीवन सरसाई
'मोहजीत' बण आतम ज्योत जगाजै, म्हारा नानूड़ा ...तूं ... ॥

लयः कल्पतरु रा बीज...



© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

## मुनि मोहजीत कुमार

जन्म : वि. सं. 2013 कार्तिक कृष्णा नवमी कोलकाता (पं. बंगाल)।

दीक्षा : आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से भगवान महावीर 25 वीं निर्वाण शताब्दी वि. सं. 2031 कार्तिक शुक्ला षष्ठी लाल किला, दिल्ली।

अग्रगण्य : वि. सं. 2063 बसंत पंचमी, आचार्य तुलसी समाधि स्थल नैतिकता का शक्ति पीठ, गंगाशहर।

यात्रा : राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, दमण आन्ध्रप्रदेश, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश।

रुचि : अध्ययन, प्रवचन, मंच संचालन, संगीत, जनसम्पर्क एवं प्रशिक्षण-अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान-जीवन विज्ञान, प्रयोग पत्रकारिता, काव्यपाठ, आखों देखा हाल प्रस्तुतिकरण।

कर्तृत्व :
- अनेक वर्षो तक गुरुकुल वास में मंच संचालन ।
- सन् 1999 से 2006 तक साहित्य समिति सदस्य।
- अहिंसा यात्रा आंकड़ों का आकलन।
- राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियों में सहभागित्व

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संगीत संगायक और श्रोता
दोनों पर अपना प्रभाव छोड़ता है।

– गणाधिपति तुलसी

वही संगीत श्रेष्ठ है जो
मन को समाधिस्थ बनाए।

– आचार्य महाप्रज्ञ

संगीत की स्वर लहरी में तल्लीन होना ही
संगीत की उपलब्धि है।

– आचार्य महाश्रमण

*मनपसन्द गीत*
मुनि मोहजीत कुमार (राजगढ़)

जैन विश्व भारती प्रकाशन
Books are available online at https://books.jvbharati.org
ISBN 978-81-935173-2-1
₹ 80